By: Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का मूल्यांकन : — Or
(समुद्रगुप्त को भारतीय नेपोलियन क्यों कहा जाता है?)
(Evalute the achievement of Samudragupta)

अपने पिता चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के पश्चात 335 ई० में वह राजसिंहासन पर बैठा। वह भारतीय इतिहास के रंगमंच पर महत्वाकांक्षी तथा विशिष्ट गुणों से सम्पन्न एक महान पराक्रमी सम्राट था उसने भारत को एक सर्वोच्च शक्ति बनाने में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की। यही कारण है कि अपने पराक्रम और विजयों के कारण भारतीय नेपोलियन की उपाधि से सुशोभित किया जाता है।

1. उसकी विजये :— समुद्रगुप्त एक महान विजेता था। वह एक बड़ा ही महत्वाकांक्षी तथा साम्राज्यवादी सम्राट था और उसे एकछत्र सम्राट बनने की प्रबल इच्छा थी। क्योंकि सिंहासन पर बैठने के पश्चात उसने अपनी दिग्विजय आरम्भ की। उसकी विजयों को हम तीन भागो में बाँट सकते हैं :

(i) उत्तरी भारत की विजय जहाँ उसकी राज्य-नीति का विस्तार हुआ था।

(ii) दक्षिण भारत की विजय :— इस विजय में उसकी नीति भिन्न प्रकार की थी। उसने दक्षिण के भिन्न राज्यों पर विजय प्राप्त की उनको अपने राज्य में नहीं मिलाया बल्कि विजित राजाओं से अधीनता स्वीकार कराकर बल्कि उनको वापस लौटा दिये।

(iii) सीमान्त प्रदेश के साथ उसने मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखा जिसे व्यवहार में बुद्धि रही। विदेशियों के साथ उसने मैत्रीपूर्ण सम्बंध स्थापित किये।

2. उत्तरी भारत की विजय :— समुद्रगुप्त ने उत्तरी भारत के नौ राजाओं पर विजय प्राप्त की और उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

इन राजाओं के नाम हैं - रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दी तथा बलवर्मन।

* 3. साम्राज्य का विस्तार :- इन राज्यों को जीतने के पश्चात समुद्रगुप्त के साम्राज्य का विस्तार पूर्व में हुगली से लेकर पश्चिम में यमुना और चम्बल नदी तक और उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में नर्मदा तक हो गया। इस साम्राज्य के उत्तर पूर्व में 5 पाँच आश्रित राज्य थे, जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी और उसे वार्षिक कर देते थे। साम्राज्य के दक्षिण में 12 राज्य थे जिनको अधीनता स्वीकार कर लेने के पश्चात स्वतंत्र कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त कुषाण तथा शक राजा उसकी मित्रता के सदैव इच्छुक रहते थे।

* 4. अश्वमेध यज्ञ :- अपनी इस महान विजयों के पश्चात समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया और अपने आपको महाराजाधिराज की उपाधि से सुशोभित किया। इस शुभ अवसर पर उसने लोगों में बहुत सी बहुमूल्य चीजें बाँटी और ब्राह्मणों को स्वर्ण मुद्राएं दीं।

* 5. समुद्रगुप्त भारतीय नेपोलियन क्यों? :- समुद्रगुप्त की इन महान विजयों को देखते हुए विद्वानों ने उसको भारतीय नेपोलियन की उपाधि दी है। वास्तव में देखा जाए तो समुद्रगुप्त नेपोलियन तथा सिकन्दर आदि से बढ़कर था। नेपोलियन की विजय अल्प काल में ही नष्ट हो गई थी, जबकि इसके विपरीत समुद्रगुप्त की विजयें अधिक स्थायी चिरस्थायी रहीं। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान तो यहाँ तक कहते हैं कि योग्यता और वीरता के क्षेत्र में तो समुद्रगुप्त नेपोलियन से कहीं बढ़कर था क्योंकि अपनी विजय यात्रा में नेपोलियन की तरह

'शासलार, तथा 'कोरलकू' को पराजय का अनुभव कभी नहीं करना पड़ा और न उसको पीछे ढकेलना अथवा पलायन करना पड़ा। अपनी विजय यात्रा में उसने अनेक लड़ाइयों का आयोजन किया था, पराजय का नहीं।

6. **समुद्रगुप्त के कार्यों का मूल्यांकन**:- भारतवर्ष के इतिहास में समुद्रगुप्त एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वह बड़ा ही वीर, साहसी तथा पराक्रमी सम्राट थी। वह बड़ा उदार तथा प्रजापालक शासक था और बड़ा भारी संगीतज्ञ था। उसके इस गुणों को अब हम अलग अलग आलोचना करते हैं:

(a) **महान विजेता**:- समुद्रगुप्त एक महान विजेता था। उसने अपने पिता के छोटे से राज्य को विशाल साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया था। अपनी अनेक विजयों के फलस्वरूप उसने देश को राजनैतिक एकता प्रदान की।

(b) **महान सेनानायक**:- समुद्रगुप्त एक महान सेनानायक भी था। उसने जितनी भी विजय प्राप्त की थी वे सब अपनी व्यक्तिगत कौशल के कारण प्राप्त की थी। वह अत्यंत निर्भीक तथा साहसी था तथा उसके शरीर पर सैकड़ों घावों के चिन्ह थे जो उसकी वीरता को दर्शाते हैं।

(c) **महान राजनीतिज्ञ**:- समुद्रगुप्त एक महान राजनीतिज्ञ भी था। उसकी दक्षिण विजय उसकी दूरदर्शिता एवं राजनीतिज्ञता का परिचायक है। वह जानता था कि उत्तरी भारत से दक्षिण भारत पर राजनैतिक नियंत्रण में शासन करना कोई सरल कार्य नहीं है। इसलिए उसने इन राज्यों को विजित करने के उपरांत उनके राजाओं को लौटा दिया और उनसे वार्षिक कर लेने लगा।